Fe 460 नं० 4989 563

॥❀॥ श्री गणेशाय नमः ॥❀॥

* लेखक के मन की कहानी *

॥❀॥ कविता ॥❀॥

मु० 1/40

नो, सुनो, जी मेरे मन की; लिखूँ एक कहानी।
लक पण से तड़प रहाहूँ, पढ़कर बनूंगा ज्ञानी ॥सुनो०
गवान चरण कि मिले सहारे, अभिलाष पूरणहो मनकी।
धा, बुद्धि; खान मुझे दो, मैं हूं जकड़े पन्छी ॥
षय शिघ्र ही लगे फसाने, कृपा करो अब जानी ॥सुनो०
ह वरष से ढुंढ रहाहूँ, पढ़ना लिखना दिल से।
र्मिक विद्वान सज्जन व्यक्ति, देखूँ कहाँ ओ मिलते ॥
लिश हिन्दी कोरष अन्य, करके बना हूँ ज्ञानी ॥सुनो०
ा माता या फटकारे, करे भी गाली हजार।
ल मस्तक लगे रगड़ने, लगेंगे हम कुछ पार ॥
सोचने सान मान के, रखदूँ नाम निशानी ॥सुनो०
धीरज धारे मैंने, सम्हल के पथ को आगे।
जों काली स्याही, नीव कलम के दावे ॥
लगा नचाने; लिखकर काव्य कहानी ॥सुनो०
दिल में विचारे, लेख कविता लिखते।
गलत बने जो, शुद्ध साफ अक्षी सिखते ॥

उरसे शारद सिद्धि विनायक, हरिचिन्ता मन जानी॥सुनो
सत्रह अठारह उनइसुई तब, श्रीवाराह कीर्त्तन तयार किया
नेपाली और हिंदी कीर्त्तन, लिखना ईश्वर सिखा दिया॥
राष्ट्र नेपाली, नयाँ युगका, प्रकाश है वह गीत सुहानी॥सु०
काव्य कला की चली हवायें, दिलमें पल्लव फूल खिला।
वाराहक्षेत्र के तीर्थ निवासी, पूरव जनम के भाग मिला॥
पिता माता तीर्थ गृहोंमें, बन्धू न साथ सुहानी॥सुनो०
अलग हुए जब भाई बहनें, मुझपर विषय जालबिछा।
बीच भवर में नैयाँ खड़ा है, शरण प्रभु से भिक्षा॥
मानवज्र वज्राचार्य्य, हरी पद प्रेम जगानी॥ सुनो०॥
बाग सुधारो दिल फूल खिलता, तड़प पड़ी है रोय।
बचा ले माली मुरझायना, खपनासा मैं होय॥
भक्त तुम्हारे मैं हूँ द्वारे, शरण मुझे लो स्वामी॥
सुनो सुनोजी, मेरे मनकी, लिखूँ एक कहानी।

❀ लेखक के नाम बदल गया है ❀

मैंने नेपाली श्री वाराह क्षेत्र धाम के कीर्त्तन की पुस्तक में, मान बहादुर गोभाजु लिखकर प्रचार किया, यह नाम नेपाली अधिक व्यक्तियों से मिलता है, यह नाम बदलकर अपना जातीय नाम से लेखक आपके सामने इन छोटी कीर्त्तन लेकर समर्पण करना चाहताहै, स्वीकार करके अवश्य पढें।

विनीतः—लेखक

४६३

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

श्री बाराह क्षेत्र धाम के कीर्त्तन

(द्वितीय भाग)

❀ श्री गणेश शारदा वन्दना ❀ (दोहा)

—*❀*—

श्री गणेश लम्बोदरम्, सिद्धि विनायक कोटि प्रणाम।
वन्दे शारद मातरम्, मम विघ्न विनाशनम्॥
श्री हंसवाहिनी उर विराजिय, मोहे दीज्यो सहाय।
दम्भ और खल दुष्टता, विनाशीय हमें भक्त कहाय॥
ज्ञान बुद्धि कछु नहीं, कीर्त्तन लिखुँ बनाय।
श्री बाराह क्षेत्र के नाम से, फिल्मी तर्ज कहाय॥
जो नर चाहत यह कीर्त्तन, उन्हें करत उपकार।
गन्दा गान सब त्यागिये, कीर्त्तन करें स्विकार॥

(श्री बाराह भगवान प्रार्थना नं० १)

—*❀*—

हे, प्रभु भगवान तुम, अन्तर्यामी।
प्रभु पदमें नित मैं, शीश नमाःमी॥
चर पशु नर सब पुत्र हैं तेरे।
नीच उःच से नैनन मत हेरे॥
दिन दया; के नित, कृपालु।
भक्त केहो तुम, रक्षक दयालु॥
जल थल नभ चर, भव के स्वामी।
प्रभु पद में नित मैं, शीश नमाःमी॥
सम दृष्टि है सब में, तुम्हारे।
दुष्ट मित्र को तुम्ह ही सम्हाले॥
तुम हो विश्व चराचर ज़गमें नामी।
प्रभु पदमें, नितमैं, शीःश नमाःमी॥
ब्रह्माजी के सृष्टि, सुधारे।
पृथ्वी उद्धारे हिरण्याक्ष मारे॥
भव में बिचरे बिचारते, हैं स्वामी।
प्रभु पदमें नितमैं, शीश नमाःमी॥

विनी मज्जित आर्ति युत धरा।
दाहों से नर्क में खोद परा॥
बाराह महिमा, कोई न जानी।
प्रभु पदमें नितमैं, शीःश नमाःमी॥
बाराह रूप, सिंधु साःसाजहीं वर्ण।
तन विशाल है अभीराम कर्ण॥
दिव्य छवि सुमन हार तन साजे।
निशिवासर मुझ उरमें, रिझहूं विराजे॥
रक्षनिहारो तुम, हृदय गामी।
प्रभु पदमें, नित मैं, शीःश नमाःमी॥
काँध पिताम्बर, कछाड़ जाँघण।
नभसाः वक्षः साजहीं भूषण॥
पद अरविंद, निंभमें, वन्दित जननी।
प्रभु पदमें नित मैं, शीःश नमाःमी
मानवज़ भी है भक्त तुम्हारे।
बन्दित करुँ प्रभु, पाप निवारे॥
कमलापति बाराह रूप हे स्वामी।
प्रभु पदमें नित मैं, शीःश नमाःमी॥

—* श्री वाराह भगवान के *—

(गजल प्रार्थना नं० २)

—:*❀*:—

श्री वाराह नाथ भगवन, पृथ्वी उद्धारने वाले।
ब्रह्मा के सृष्टि देखकर, पृथ्वी को देनेवाले॥
हिरण्याक्ष मार प्रभुने, देवताओं को बचाये।
मुझको भी अब सम्हालें, सृष्टि रचाने वाले॥ श्रीवा०
चार वेद पावमें धर, दाहों में भुः बसाये।
विशाल देह लेकर, शोभित दिखानेवाले॥ श्रीवा०
भवके हैं आपु मालीक, देवताओं के हैं स्वामी।
पृथ्वीकी दुःख निवारे, वाराह रूप धनेंवाले॥ श्रीवा०
श्री लक्ष्मी पावमें है, चरणों के ध्यान करती।
कोकाहा कौशी जी की, संगम में आनेवाले॥
पहाड़में नित विराजे, वाराह क्षेत्र धाम कहाय।
मानवज्र हैं शरणमें, भक्ति के हीयवाले॥
श्री वाराहनाथ भगवान, पृथ्वी उद्धारनेवाले।

* श्री वाराह क्षेत्र तीर्थ स्तुति *

(छन्द) नं० ३

श्रीवाराहक्षेत्र विशाल तीरथ,कोकाहा कौशी की संगमम्।
सरखती ब्रह्मानंद वेष्ठित,बीच श्रीवाराह नाथ विश्वंभरम्॥
श्वेत पीत अरूण नील नवपल्लवों, सूमन प्रकाशितम्।
निकट कोकाकौशी सङ्गम कगार, श्रीवाराहनाथ विश्वंभरम्॥
वहत निर्मल निर गंभीर, बिच पर्वत शोभितम्।
सिंढी सुसज्जित चढ़त यात्री,श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम्॥
पवन मंद सुगन्ध शीतल, रसाल द्रुम निकुञ्जनम्।
अपार महिमा सुकर क्षेत्रके, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम्॥
श्रीसप्त कौशी कोका सङ्गम, स्नान ध्यान अती पावनम्।
ताम्र पात्र में नीर चढ़ावे, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम्॥
पुष्प धूप दीप चन्दन, पूजफल पुनि मुलनम्।
माथ पदमें धरीयो अनुदित, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम्॥
भक्ति ऐसे करियो नरतो, उपगती सो पावनम्।
वैकुण्ठधाम गमनस्थित, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम्॥
आर्तियुत विनि मज्जित, धार धराः दुःख निवारणम्।
विशाल दंत रंग ससिपुरितसी,श्रीवाराहनाथ विश्वंभरम्।

नभसाः वक्ष सिंधु वर्ण, मोतिन पुष्प सुशोभितम् ।
अधरावर मन रंजन द्वै, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम् ॥
लोचन भृङ्ग भृकुटि सरासन, सम भाल कच किरीटकम् ।
पद कमल युग अङ्ग नुतन, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम् ॥
काँध पट पीत अरुण अछही, इतनार तन सुसज्जितम् ।
प्रभु स्वामी कमलापति, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम् ॥
श्रीविराजत पदको ध्यावत, राजीव लोचन सुशोभितम् ।
दुरीवदन तन अछहि, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम् ॥
कच भाल भावत काजरी, धौरीतन छवि मृदुःभुजम् ।
श्रीछवि मोतिनमाल भूषण, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम् ॥
वाराहनाथ पुःनि दक्षिण वदनमुरि,प्रमोद जायोमठ विराजित
वायेंकुहना उँचाय भूःधर, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम ॥
दायाँकर कटितट गह्यौ मणि जड़ित तन सुशोभितम् ।
नाना मन्दिर दृजा भुरि अनत, श्रीवाराहनाथ विश्वंभरं
तुलसी पञ्च लक्ष्मी शंकर, क्षेत्रपाल सुर तरुम् ।
गणेश दुर्गे शंखचक्र, श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम् ।
नवराज इन्द्र नागेश्वर, श्रीनरसिंह भैरव पदस्थितम् ।
श्री गुरु वाराह हय ग्रीव श्रीवाराह नाथ विश्वम्भरम् ।

श्रीसूर्य वाराह कोका वाराह, श्रीविष्णुपद पुःनि विराजितं।
निशि वासर हौंः प्रमोद नेःहसे, श्रीवाराहनाथ विश्वंभरं॥
हरहूं रिझके जन्म जन्म, विघ्न चीत्त सौं बिनाशनम्।
मम भक्त अनुरक्त सुजानि, श्रीवाराहनाथ विश्वम्भरम्॥
पठत निशदिन नरजो इसको, कोटि तीरथफल दायकम्।
मन वाञ्छित पूर्ण फल दम श्री विष्णुपुर नरस्थितम्॥

इति श्रीवाराहक्षेत्र तीर्थ स्तुति संपूर्णम्।

—:❀:—

(भक्तों के दुखः दूर करने को वाराह रूप धारण)

(गजल प्रार्थना नं० ४)

श्री वाराहनाथ मुझ पर, आकर कृपा करीय।
सुर श्रेष्ट श्री वाराहजी, करुणा नयनधरीय॥
भक्तों के दुःख निहारे, झट रूप अनेक धरते।
दुष्टों को नष्ट करके, भक्तों को हैं बचाये॥ श्रीव०
श्री वाराहनाथ प्रभु के, वर्णन करेंगे कैसे।
अपरम्मपार लिला, अनुभव न ठिक पाये॥श्रीवा०
जब ब्रह्माजी चर्तुमुख, सृष्टि अनेक करके।
स्थिर भुः न पाये, व्याकुल उर होये॥

चिन्तन करोहिये में, ध्यावन लगे हरिको।
ब्रह्माके कष्ट देखकर, श्रीकान्त वाराह हो आये॥
अद्भुत स्वरूप देखे, भयभित होके भागे।
पूःन ईश सोच विमोचन, जाने स्वःहाल बताये॥
अश्वाशना उन्हें दे, वाराहनाथ शीघ्र भावे।
सिन्धु में नाद उछल्ते, लख्यौभुःधार पाये॥
भुः वापुरी बिकलहो, बिल खिः चरण पकड़ती।
तज भुः नहीं तो मारुं, हिरण्याक्ष कहते आये॥
देः मार श्रीवाराहने, दाहों में भुः चढ़ाते।
दुख दूर कर दियो है, सृष्टि सुधार धाय॥
वन्दनः पुष्प वर्षा, सुरनर मुनि प्रमोद हो।
मैं भी हूंः पद्म पद में, मान वज्र उर चढ़ाये॥

(वाराह भगवान द्वारा हिरण्याक्ष वध)

गजल नं० ५

वाराह जी जल में विराजे, दाहों को साजहीं धारे।
नरक से झाँप रखा था, दाहों से भुः को उद्धारे॥
वाराह के पाव में परती, भुः देवी स्तुति करती।
चतुर्वेद पाव में लिये, हैं साजे दाहों को धारे॥

दिये हैं आपने दर्शन, हरे हैं आन दुःख मेरी।
विकल हो ध्यान करतीथी, दे दर्शन मुझको उद्धारे॥
प्रभुमें नेःह नित लागे, सभी दुःख दूर हो भागे।
महेश ब्रह्मा ऋषिशेष, नजाने गुणों को सारे॥
वाराहने पृथ्वी को धारे, ज्योंही जल छोड़ते आये।
हिरण्याक्ष देखते दौड़ा, हिलाः जल क्रोध के मारे॥
कउन हो चोर भुः मेरे, कहाँ ले दौड़ के जाते।
धरा को शीघ्र से छोड़ो, नहीं तो काल हूं तेरे॥
तिहूं लोक कम्पहै हम से, मुनि नर सुर भी भागे।
हरण कर पृथ्वी लाये थे, चुराकर क्यों तुने धारे॥
कपट रूप धार आते हो, करो युद्ध चोट चखाउँगा।
वाराहने गर्जना सुनते, हँसी भर, पृथ्वी सम्भाले॥
अनेक झुण्ड व्योममें, सुरनर, मुनिगण बंदना करते।
गदा युद्ध कर लड़े दोनों, जगत कम्पित हुये सारे॥
निकाले बर्छि और भाला, मुष्टिक युद्धकर लड़े भारी॥
सायंकाल देख स्तुति ब्रह्माने, कहते अब मारे॥
सुदर्शन चक्र से दो भाग; वाराहने शीर छेदनकर।
पहुँच हिरण्याक्ष सुरपुरमें; सफल हो तन गये सारे॥

त्रिलोक चौध भुवन नाथ, नमस्ते दंडवत साष्टाङ्ग ।
हरिके भक्त मानवज्र, जगत सिन्धु से अब तारे ॥

(श्री वाराह क्षेत्र तीर्थ छवि)

(गजल प्रार्थना नं० ६)
(कवाली)

निर्झर निर्मल मंद पवन, मनरंजन पुष्प सुगंधित है॥टे०॥
पुष्प सजे छवि श्वेत मृदु, मंजुल गिरी घन ध्यान सदा।
निवास करे जगदीश प्रभु, वाराहरूप धरे सुरि दक्षिणहै॥
पकड़े करसे कटि और दुजा, कुहनाभी उठा दाहोंमें धरा।
विद्युत प्रभा नभ वक्ष सटा, पट पीट पिताम्बर साजतहै॥
कच भाल किरीट कछाड़ कटि; पुष्प चढ़े गल मालभई।
निहार रही पद श्रीजाननी; विधुवैनी सुशोभित ध्यावतहैं॥
कोकाहा कौशी बहे; सुर गान रचे; सुकृतदायक संगममें।
शंखचक्र पुःनि सोम तीर्थ वहीं; वाराहक्षेत्र महानमहातंहै॥

रमणिय छटा वाराह क्षेत्र में

(गजल कवाली कविता नं० ७)

घन घोर घटा गिरी मंजु लता; खग मोर बिहंगिनी नाचनचा ॥टे,
व्योंम भई नील लील अरु; सुख दायकहै वह पुष्प तरू।
नील पीत अरुन पुष्प पत्ता; साजहिं नवीन स्वेत छटा ॥

मनोःहर भावत सुकृत महिं, शीत सुगंधित पवन बही।
मंजुल हंस भी खेल रचा, मन भावत चंचल हो सरिता ॥
बही गंभीर नीर भई सहरी, गिरी वेष्ठित तट पटसेहैं भरी।
गुनगान व ध्यानकरे प्रभुके, सुसज्जित मंदिरहैओ गीता॥
वाराहरूप लिए वाराहक्षेत्ररहे, कोकाहा कौशी की संगंसाथ बहे।
यहक्षेत्र महातम नैया बने, भवसिंधु से पार किनार पता ॥

(वाराह नाथ के दर्शन)

❀ गजल ताल कवाली नं० ८ ❀

—:*❀*:—

तज बिषयका झुठा काम, लेकर वाराहनाथका नाम॥टेक॥
कौशी जावे कोका जावे नहाः शरीर तमाम।
ताम्र पात्रमें जल लेजाना, जपते वाराहका नाम ॥१॥
पाप मिटावे पद को ध्यावे सुफल कर ज़नम।
ज़ल चढ़ावे फल चढ़ावे सुद्ध करे आत्माराम ॥२॥
तन चढ़ावे मन चढ़ावे मुँह से गावे राम।
घट में वाराह स्वरूप बसावे, पदमें शीश हरदम ॥३॥
वाराहक्षेत्रको ज़ानो रे मनुवा, सबसे यह उपधाम।
मानवज़ परम पद पावे ज़ावे नर सुःखधाम ॥४॥

(वैशाक का भक्ति)

प्रभाती ताल दादरा नं० ९

आश हरि दर्शनोंको, वाराह क्षेत्र धाईये ॥टेक॥
पुष्प फल धुप दिप, चंदनों चढ़ाइके।
वैशाक एकादशी से पुर्णिमामें जल चढ़ाये ॥१॥आ
दिन भर वर्त करे रात जागरित करे।
कीर्त्तन गान भजन तान प्रेम से ही गाइये ॥२॥आ
महातम्य बिशाल है एक दिनों के भक्ति भी।
एकादशीसे पुर्णिमा तक,अनन्त फल जानीय ॥३॥आ
वाराह नाथ पदमेशीर, नवाय मन होय धीर।
मानवज्र यों पुकारे शीघ्र हम से भाइये ॥४॥आ

(ब्रह्मानंद सरस्वती पहरेदार)

प्रभाती ताल दादरा नं० १०

ब्रह्मानंद सरस्वती बायें है पहरे दारी ॥टेक॥
खल खल खल बहत नीर पवन खरमधुर मधुर।
गीर गीर कर पाषण गिरी विपिन भङ्ग पारी ॥१॥
छलछलछल कोका बहे सलसलसल कौशी चाल।
दादुर हूंकत भृङ्ग सुमन गावत पावन कोयल भारी॥२॥

फ़ूफ़ूफ़ चातक चैन नचत नाच भावत नैन।
हरीत वृक्ष लता लहर चारू गगन घन वारी ॥३॥
रैन बरष हंस चलन खगति खेलत साजे।
मानवज्र वज्राचार्य्य, वाराह आशकारी ॥४॥

(इति द्वितिय भाग सम्पूर्णम्)

—*❀*—

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

* श्री वाराह क्षेत्र धाम के कीर्त्तन *

(तृतीय भाग)

फिल्मी गानों के तर्ज पर

(माघ मेले के वर्णन)

तर्ज—हवामें उड़ता जाय (बरसात—गाना नं० १

माघमें मिल्के जाय, संक्रान्तिके मेला लगनेका हो० २॥
संक्रान्ति के मेला लगने का होजी, होजी, ।
अधिक पहाड़से यात्री आते, संक्रान्तिके मेला लगनेका, हो०
वाराह क्षेत्र में जाकर देखें, वाराह के रूप है कैसा,
वाराह के रूपहै कैसा।
कोका कौशी संगम जाकर, नहाँ के पापभी ऐसा २॥

सुद्ध चीत्तसे भक्ति करे तो, भवसिंधु से तर्नें का हो०
भव सिंधु से तर्नें का ॥

माघ में मिल्के जायँ संक्रान्ति के मेला लगनेका हो२॥
ताम्र पात्र में जल ले आकर, वाराहके माथ चढ़ाये ।२॥
फूल परसाद शीर लगाना, जनम सुफल हो जाये ।२॥
वाराह नाथके मंदिर नीचे सिंढी बनाहै चल्नेका हो०२॥
माघ में मिल्के जायँ, संक्रान्तिके मेला लगनेका, हो२॥
सिंड़ी उतरकर धाममें देखें,रमणिय मेला शोभाहै हो२॥
पहाड़के यात्री जमा हुआहै,दूकान सुसज्जित सब् चीज़है
दूकान सुसज्जित सब् चीज़ है ॥२॥

दोनो तरफ से लाइन जमा है,रास्ता बीचमें यात्रीका ।
माघ में मिल्के जयें संक्रांतिके मेला; लगनेका हो० सं
रंगी बिरंगी भेष बनाकर पहाड़के यात्री आतेहैं। पहाड़
बिहारके कुछ यात्री आते, दर्शन वाराहके करतेहैं। द०
मानवज्र भी आश कियेहै,वाराहके पदको पानेका हो०२
माघ में मिल्के जायें संक्रांति के मेला लगने का हो०२

—*❀*—

(कार्तिक महिमा मेला वर्णन)

—*❀*—

गाना नं० २ तर्ज—(जिया बेकरार है)

जिन्को मेला जाना है, कार्तिक में भी धाम है।
कोका कौशी साथ में वाराह जी वहाँ है॥
हो-देश विदेशके यात्री मिल्के, वाराह क्षेत्रमें आतेहैं।
वाराह क्षेत्र में आते हैं॥
वाराहनाथ के दर्शनसे ही, भवसिंधु से तर्तेहैं। हो।
भव सिंधु से तर्तें हैं॥
जिन्को मेला जानाहै कार्तिक मे भी, धामहैं। कोका।
कोका कौशी संगम शोभित, यात्रीयोंके रहनेसे, हो०
यात्रीयों के रहने से॥
मेला पहुंचे दूकान देखिये, क्या चीज कि यहाँ कमीहै,
क्या चीज कि यहाँ कमी है॥
सिंढी उतरे मेला देखिये, दूकान किराना शोभा है॥
दूकान किराना शोभा है॥
पहाड़ के चीज लेआके रखता, कोकाहाके तीर में, हो
कोकाहा के तीर में।

कार्तिक एकाद्वशी पुर्णिमा तक, जलदान वाराहका महिमाहै
मानवज्र भी दर्शन करीय मौका यहाँ भारी है।
जिन्को मेला जाना है, कार्तिक में भी धाम है, कोका०

—*❀*—

—* पुजन बहार *—

गाना नं० ३ तर्ज— बहे अखियों से धार

बहे कौशीजी की धार-कोका बहे बेसुमार,
सुन्दर सुन्दर पहाड़, जायेंगे कहाँ ऐसे छोड़के।
ओ वृक्षमें से फूल तोड़के, जाके चढ़ाये वाराहनाथ को।
फूल अच्छी अच्छी तोड़, गुथें लम्बी लम्बी हार—
सुन्दर सुन्दर पहाड़—
यहाँ वाराहनाथतोहैं दयालुही, दर्शनकरो नाश अपनी पापभी।
लायें फूल और सिंदूर धुःप दिप सजे दार
सुन्दर सुन्दर पहाड़—
जब नजर से वाराह को देख पायगी,
जनम से पाप छुट जायगी॥
मनवज्र के हैं उन्से प्यार जायें सभी सहज पार।
सुन्दर सुन्दर पहाड़, जायेंगे काहाँ ऐसे छोड़ के॥

* भगवान भक्त का अभिलाषा पूर्ण *

गाना नं० ४ तर्ज—(अफसाना लिख रहा हूं)

वाराह क्षेत्र जा रहा हूं, दर्शन श्री वाराह का।
पाप विनाश करने वाले, वही हैं सहारे का॥
चले जाउँ कि अबतो,नजदीक ही आगये, नजदीक ही०
दिल चाहताहै दर्शन करना, श्री वाराह नाथका ॥पाप०
आशा था पहले ही से, वाराह क्षेत्र ज़ायेंगे ॥ वाराह०
अब मैं तो आरहा हूं, लेकर नाम वाराह का ॥ पाप०
आशा भी पूर्ण कर्के, वाराहक्षेत्र ही पहूंच गये॥वाराह०
मानवज्ञ है दर्शन करते, पाप सब बहाने का ॥ पाप०

* श्री वाराह भगवान से अरज *

गाना नं० ५ तर्ज—अखिया मिला के (रतन)

वाराहक्षेत्र ज़ाके,दर्शन उन्हें करके, पर्साद लेकर आना॥ हो
पाप मन्में आने नदूं, वाराहज़ी को देख लुङ्गी ॥
वाराहज़ीके पैयाँ पड़ ज़ाउँगी,
पकड़े कहूंगी—वाराह क्षेत्र०
प्रभुके पाव से छोड़न देना, य, पाँप में न लुभाना।
मोहमें न फँस रहे २,मेरा यही कहना ॥वाराह क्षेत्र ज़ाके

मन वाराह के पाव में हो, उन्ही में दिल बैठा जाय।
मानवज्र के दिल नित, लग जाय ॥ वराह क्षेत्र०

—❀ श्री वाराह दर्शन प्यासी ❀—

गाना नं० ६ तर्ज—(कंकड़ कंकड़ से मैं पूछूँ) हरहर०

—❀—

सुन्दर सुन्दर शोभ देखूँ, वाराह मेरा कहाँहै, कोई बताय
लहर लहर लहराय कौशी, जङ्गल पहाड़ शोहाय।
त्रीभुवन का स्वामी अपना, कहाँ हो जल्द बुलाय ॥
मेरा जनम सुफल हो-जाए—कोई बताय
सुन्दर सुन्दर शोभा देखूँ, वाराह मेरा कहाँहै कोई बताय
जिनके कारण घर से धाकर, वाराह क्षेत्र में जाउँ,
कोका कौशी संगम निकट, दर्शन करने आउँ।
श्री वाराह नाथके दर्शन खातीर आय, कोई बताय ॥
सुन्दर सुन्दर शोभा देखूँ, वाराह मेरा कहाँहै, कोई बताय।
श्री वाराहजी के दर्शन बिनही, बिकल मन मेरे भाय।
कोका कौशी संगम जाकर, नहाकर पाप छुड़ाय ॥
मानवज्र वाराह को नीर चढ़ाए— कोई बताए ॥
सुन्दर२ शोभा देखूँ; वाराह मेरा कहाँहै—कोई बताए।

कीर्त्तन नं० २

तर्ज—(पंछी और परदेशी दोनों, नहीं किसी के प्रीत)

वाराह क्षेत्र में जाने का, करीय मन में प्रीत।
जैसे दिल भी पद में लागे, मन में धर्म समाय॥
वैसे ही हम सब मिल्के, वाराह क्षेत्र में जाय।
दिन रात हरी गुण गावे, जावे रतिया बीत।
वाराह क्षेत्र में ज़ानेका, करीय मन में प्रीत॥
मन लगाय, आँखसे देखें, दिल लगाय और न घुराये।
वाराह नाथ के पद में जाकर, मन से पाप छुड़ाये॥
अपना भाई बन्धु मिलकर गावें वाराह गीत।
वाराह क्षेत्र में जाने का करीय मन में प्रीत॥

॥*॥ झूठी जगत की पहिचान ॥*॥

तर्ज—हो- बच पन के दिन भुला न देना नं० १०

हो-वाराह नाथ मुझ को भुला न देना।
आज हँसा कल रुलान देना॥ हो वाराह नाथ०
झुठे हैं यह जीवन रास्ते।
वाराह पदमें मन दो आस्ते॥

भाई बन्धु से नाता लगाये।
झुठे य ज़गमें, लुभा न देना॥ हो वाराह नाथ०
महल बनाकर धन भर दिया।
यह धन मेरा कहने न पाय॥
स्त्री न मित्र बन्धु न अपने।
ज़ायेंगे एक दिं नंगे सो ज़ाने॥
मानवज्रहै ओ पद में दिवाना।
हो-वाराह नाथ मुझको भुलान देना॥

* वाराह नाथ के आगमन स्वागत *

तर्ज—कैसी खुशी की है रात,वलम मेरे साथ नं० ९

कैसी खुशी के वे साथ वाराहज़ी हैं नाथ,।
कौशी तीर आयेरे, कोका संग पायेरे॥औ कैसी०
पृथ्वी उठाय लाये, दाहों में धार लाये।
हिरण्याक्ष राक्षश, चक्र से, मार लाये॥
ओ कैसी खुशी के वे साथ वाराहज़ी हैं नाथ
कौशी तीर आयेरे, कोका संग पायेरे
लक्ष्मीने पाँव छोया देवता ओं साथ आया।
स्तुति किये उन्हें पुष्प के वर्षा किया॥

—* वाराह रूप दर्शन प्यासा *—

तर्ज(रूम झुम बरसे बादरवा, मस्त हवायें आई)नं०१० (रतन)

हरदम मन से वाराह का, गावें कीर्त्तन भाई।
मेरे उर आजा, आजा-मेरे उर आजा॥
हौले २ पर्वत घिर २ आगये आगये।
ऐसे में हम कोका कौशी, पा गये पा गये॥
जाकर वहाँ नहाय रे मैं यहाँ प्रभु कहाँ,
ओ प्रभु आजा, आजा-ओ प्रभु आजा।
हरदम मनसे वाराह का गावें, कीर्त्तन भाई,
मेरे उर आजा, आजा, मेरे उर आजा।
मुझ दुखियन कि दुःख वाराहजी हरते हैं, हरते हैं,
वाराहनाथ को, तन मन देके, कहते हैं...कहते हैं॥
मानवज्र शीर नवाये रे, प्रीत दिवाने तेरे।
रूप दिखला जा आजा, रूप दिखला जा॥
क्या करूँ मैं, मुढ़ मती मेरे, होगई, होगई।
मेरे मन तो मन्द, चन्द रूपमें, खोगई खोगई॥
दर्शन वाराह का प्यासा नयनवा मोरा।
तेरे शरण आजा आजा, तेरे शरण आजा॥
हरदम मन से वराह का॥

धाम के आगमन से उत्साह की बहार

गाना नं० ११ तर्ज-(आजाओ तरफते हैं अरमां)

अब रात गुजरने वाली है।

आज़ाओ वराहज़ी रहते हैं ज़हाँ, अब धाम भी आनेवाली है।
मैं पाउँ कहाँ वह रहते हैं ज़हाँ, अब धाम भी आने वाली है॥
ओ-वृक्ष भी सुन्दर होने लगी, वो सारोंके दिल अब उबगये।
है कौशी नीली कोकाहा ज़हां, अब धाम भी आने वाली है।
उन्हीं चाँद भी नभ में, आई नज़र, ओ रात की पर्दा चल्दी किधर।
भगवान वाराह जी रहते हैं जहाँ, अब धाम भी आने वाली है॥
जङ्गल की लहर भी जाग गई, सङ्गम कि भी नीर अब गाने लगी।
मानवज्र नहीं छोड़ेगे यहाँ, अब धाम भी आनेवाली है॥

—* वराह क्षेत्र के वर्णन *—

कीर्तन नं० १२ तर्ज-(मोहन की मुरलिया बाजे)

वाराह क्षेत्र में खुशीयां छाई...हो...हो
जहां रहते हैं वराह रूप धारे।

बड़ा बड़ा पहाड़ के अन्दर, सुन्दर बनमें शोभित
हैं वहाँ सारे।
विष्णु अवतार श्री वराहजी हैं, बैठे पृथ्वी उद्धारे॥
दाहों में पृथ्वी धारे हो-हो जहाँ रहते हैं वराह रूप धारे।
हरे भरेहैं फ़ल फूल वृक्ष, शोभाय पहाड़ को देता।
लाल सफेद पीला नीला, फूल आकर्षित मन हरता॥
रमणिय मन्दिर पारे, हो-हो जहाँ रहते हैं वराह रूप धारे।
सप्त कौशी और कोकाजी ने, संगम आपू बनाय।
सरस्वती और ब्रह्मानन्द जी, पहरा बहे सुहाय॥
भगत को दिय नित सुखारे हो-हो जहाँ रहते हैं वराह
रूप धारे।
मानवज्र वज्राचार्य्य, जात शुभाजु मेरा।
कल्पित करके कीर्त्तन लिखुं, सारद उर में डेरा।
शुद्ध अशुद्ध पढ़ लेना सुधारे हो-हो जहां रहते हैं वराह
रूप धारे।
पिता माता हम शरण में, नित हैं वराह तिहारी।
वराह क्षेत्र में मंदिर नजदीक, रहते चरण निहारी॥
रखना हमें सम्हाले हो-हो जहां रहतेहैं, वराह रूप धारे।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

प्रिय सज्जन पाठक वृन्द

यह लिखित किताब आपके मन मोहक दिल सं
करनेवाली जरुर नीचेके पता से मंगाकर या
खरीदकर प्रेम साथ पढें ।

श्रीवाराह क्षेत्रधाम के कीर्त्तन(द्वितिय तृतीय भाग सं
फिल्मी गानों के तर्ज पर

नेपाली में—श्री वाराहक्षेत्र धामको कीर्त्तन(प्रथम
फिल्मी गानाको तर्जमा

—*मानवज्र नौलो युग को प्रकाश*

(राष्ट्रीय लोक गीत)

मंगाने का पता—

मानवज्र वज्रचार्य्य "गुभाजु"

वाराह क्षेत्र मन्दिर नजीक निवासी (नेपाल)

पो० जोगबनी जिला पूर्णिया